जननायक
चौ० देवीलाल

संपादक
डॉ० रामफल नैन

www.drnain.com

www.drnain.com

जननायक चौ॰ देवीलाल

भीतर के पृष्ठों पर

2

मस्त फकीर थे चौ0 देवीलाल

8

लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया

30

चौ0 औमप्रकाश चौटाला को बनाया राजनीति का वारिस

संपादक- डॉ0 रामफल नैन

सम्पादकीय

सर्वाधिक लोकप्रिय नेता

चौ. देवीलाल

हरियाणा की धरती पर जन्मे युग पुरूष चौ0 देवीलाल ने न केवल हरियाणा बल्कि पूरे भारत वर्ष को विश्व में अपने नाम के साथ प्रसिद्ध किया है। चौ0 देवीलाल ने 71 वर्षीय राजनीतिक जीवन में कभी अन्याय के आगे सिर नहीं झुकाया। हरियाणा को एक अलग प्रदेश बनाने और उसके बाद इस प्रदेश की खुशहाली के लिए चौ0 देवीलाल ने अपने जीवन का एक-एक लम्हा खर्च डाला। चौ0 देवीलाल जुझारू नेतृत्व के बल पर लोगों की बड़ी से बड़ी कठिनाई को सरकार से टक्कर लेकर हल करवा लेते थे। उन्होंने अपनी विचारधारा, मान्यता एवं सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और सत्ता के गलियारों में प्रवेश के लोभ को सदा ताक पर रखा।

जब भी चौ0 देवीलाल को अवसर मिला उन्होंने महान् परम्पराओं को जन्म दिया। आज के इस कलियुग में जहां भ्रष्टाचारी नेता कुर्सी के मोह में पड़कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए सभी प्रकार की मर्यादाओं को ताक पर रख देते हैं और कुर्सी पर बैठने के लिए मर मिटते हैं। आपने टेलिविजन पर भी देखा होगा कि जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों को पैसे के बलबूते पर खरीदा जा रहा था। वहीं चौ0 देवीलाल ने प्रधानमंत्री के मुकुट को श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के सिर पर रख कर अपने विशाल हृदय में निहित त्याग की भावना का परिचय देते हुए समस्त हिंदूस्तान की राजनीति में एक मिसाल कायम की है। चौ0 देवीलाल किसी परिचय के मोहताज नहीं रहे बल्कि यूं कहा जाये कि उनकी लोकप्रियता से हरियाणा प्रदेश की पूरे विश्व में एक पहचान बनी है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। पिछले 20 वर्षों से चौ0 देवीलाल को देश का सर्वाधिक लोकप्रिय नेता होने का श्रेय प्राप्त हुआ है।

-डा0 रामफल नैन

मस्त फकीर थे चौ0 देवीलाल

चौ0 देवीलाल के असाधारण व्यक्तित्व व जनाकांक्षा के अनुरूप खरा उतरने के गुणों के कारण उनकी लोगों में गहरी पैठ थी। चलते-चलते चौपालों में लोगों के बीच में बैठकर हुक्का पीना, उनकी खुशी-गमी में शामिल होना उनकी एक विशेष पहचान थी। उनके गांव में आने की खबर आज के इंटरनैट से भी जल्दी सभी लोगों तक पहुंच जाती थी और लोग उनके चारों ओर बैठ कर उनके मुखारविंद से निकले अनमोल वचनों को अपने हृदय में बिठा लेते थे।

किसानों ने चौ0 देवीलाल को जीते जी देवता मानकर पूजा। चौ0 देवीलाल अन्तिम क्षणों तक बड़े पूंजीपतियों व शोषण करने वाले लोगों के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। चौ0 देवीलाल को एक जाति विशेष का कहना संकीर्ण मानसिकता का प्रतीक है क्योंकि चौ0 देवीलाल जैसे नेता पूरे समाज के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। जो दिशा व प्रेरणा चौ0 देवीलाल ने समाज को दी है, समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। किसान वर्ग को असली मुकाम पर पहुंचाने वाले चौ0 देवीलाल ही हैं। कृषक समुदाय की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुंच बनाने के लिए कृषि जोन्स की स्थापना, किसानों की फसल के उपचार, संरक्षण, शोध एवं विकास की सुविधाओं की घोषणा वह सब चौ0 देवीलाल के पूर्व में किए गए संघर्ष का ही परिणाम है।

संयुक्त पंजाब की राजनीति से अपनी जुझारू जिंदगी की शुरुआत करने वाले चौ0 देवीलाल देश के ऐसे राजनेता थे जिसके प्रशंसकों में बूढ़ों से लेकर बच्चों तक के सभी वर्ग शामिल हैं। जब चौ0 देवीलाल देश के प्रधानमंत्री बनाने व बदलने की क्षमता रखते थे तब भी किसानों व मजदूरों के हितों पर वह उतने ही पैनेपन से निगरानी रखते थे।

किसानों ने चौ0 देवीलाल को जीते जी देवता मानकर पूजा। चौ0 देवीलाल अन्तिम क्षणों तक बड़े पूंजीपतियों व शोषण करने वाले लोगों के विरूद्ध संघर्ष करते रहे।

दरअसल उनका मस्तमौला व्यक्तित्व सत्ता के अस्थायीपन से कभी प्रभावित नहीं होता था। ताऊ जी ने सदा लोगों की व धरती की राजनीति की। 'लोकराज, लोकलाज से चलता है' का नारा देने वाले ताऊ जी ने इसे केवल नारे तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि इसे व्यावहारिक रूप भी दिया।

सिरसा जिले के चौटाला गांव के पास गांव तेजा खेड़ा, सालम खेड़ा व खाजा खेड़ा आदि चौ0 देवीलाल द्वारा दान की हुई जमीन पर ही बसे हैं। यह सब उनकी विशाल हृदयी व उदारता का परिचायक है। आज के राजनेताओं को तो गरीबों से बू आती है परंतु चौ0 देवीलाल गरीबों के साथ ही अधिक लगाव रखते थे।

एक बार जब चौ0 देवीलाल चौटाला गांव में जहाज द्वारा आए तो सड़क पर पत्थर कूट रहे मजदूरों ने देवीलाल से जहाज में बैठने की इच्छा जाहिर की। उदार हृदय के इस महापुरूष ने तुरन्त बिना किसी संकोच के मजदूरों को जहाज में बैठाकर एक चक्कर लगवाया। बच्चों के साथ बात करते हुए, खेलते हुए वह बच्चे हो जाते थे। कई बार जब छोटे बच्चे गांव में गाड़ी का होर्न बजाने की जिद्द करते तो चौ0 देवीलाल उन्हें गोद में उठाकर प्यार से पुचकारते और उन्हीं के हाथों से होर्न बजवाते। कोई भी व्यक्ति उनके पास अपनी मांगे अथवा शिकायत आदि ऐसे लेकर जाता जैसे परिवार का व्यक्ति अपने बुजुर्ग दादा के पास जाता है। ऐसे महापुरूष कभी-कभी ही जन्म लेते हैं।

चौ0 देवीलाल मुख्यमंत्री अथवा उपप्रधानमंत्री होते हुए बिना सुरक्षा कर्मियों के चल देते थे। विशिष्ट व्यक्तियों के लिए सरकार विशेष जैड सुरक्षा की व्यवस्था करती है परंतु ताऊ जी का कहना था कि जनता के लोकप्रिय नेता को किसी प्रकार की सुरक्षा की जरूरत नहीं होती। जवानी के दिनों में जिस खोखे पर बैठकर चाय-पानी आदि पीते थे। कई बार वहीं अचानक अपनी गाड़ी रूकवाते और चाय बनाने का ऑर्डर दे डालते। इसी प्रकार कभी अपने पुराने दोस्तों के घर पहुंच जाते और उनके साथ बैठकर भोजन करने लगते।

गांव चौटाला का इतिहास

गांव चौटाला हरियाणा, पंजाब तथा राजस्थान की त्रिवेणी पर बसा हुआ है। संगरियां (राजस्थान) से 5 कि.मी. दूर तथा डबवाली से 25 कि.मी. दूर मुख्य सड़क पर बसे इस गांव में कभी जंगल हुआ करते थे। धीरे-धीरे लोगों ने जंगल काटकर यहां बसना शुरू कर दिया। जिस समय अंग्रजों ने सिरसा पर अधिकार किया तब इस क्षेत्र में केवल 35 गांव आबाद थे जिनमें रानियां सबसे बड़ा गांव था। सन् 1820 ई. में इस क्षेत्र में 94 गांव बस चुके थे। चौटाला गांव में करीब 3000 घर हैं। इस गांव में सभी धर्म तथा जातियों के लोग रहते है। भाखड़ा नहर आने से यह गांव हरितक्रांति का प्रतीक बना हुआ है।

चौ लेखराम

राजस्थान के नजदीक होने के कारण लोगों का पहनावा राजस्थानी है। मर्द धोती कुर्ता या चादर कुर्ता तथा औरतें लहंगा-कुर्ता तथा ओढ़ना पहनती हैं। यह गांव समस्त आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण है। गांव में एक खेजड़ी का पेड़ होता था। उस पेड़ की चार डालें थी, जिसके आधार पर इस गांव का नाम 'चौड़ाला' पड़ा, धीरे-धीरे यह बिगड़कर 'चौटाला' के रूप में पुकारा जाने लगा। एक अन्य विचारधारा के अनुसार यहां 'चौटाला' नामक व्यक्ति रहता था। शायद उसी के नाम से गांव का नाम 'चौटाला' पड़ा है। गांव के बुजर्गों के अनुसार यहां श्रीमती आशकौर जायदाद की मालकिन थी। राजस्थान के सरदार शहर का एक श्री राम सहारण नामक व्यक्ति उनके नौकरी करता था। श्रीमती आशकौर के औलाद नहीं थी। उनकी मृत्यु के बाद परिजनों को डर था कि सम्पूर्ण जायदाद श्री राम सहारण को मिलेगी। इसलिए उन्होंने श्री राम सहारण को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद श्री राम सहारण के परिवार वालों ने अपने एक रिश्तेदार श्री गोटूराम गोदारा को बुलवा लिया। आशकौर के रिश्तेदारों ने उसका भी कत्ल कर दिया। श्री गोटूराम के लड़के के नाम पर आशाखेड़ा और श्री रामसहारण के लड़के भारूराम के नाम पर भारूखेड़ा गांव बसा हुआ है। जिस समय सहारण व गोदारा के साथ आशकौर के रिश्तेदारों का झगड़ा चल रहा था। उसी समय श्री लालाराम सिहाग नाम व्यक्ति सहारण व गोदारा की मदद करने के लिए आया। इन तीनों जाटों ने पड़ी जमीन तीन हिस्सों में बांट ली। श्री लालाराम के दो पुत्र थे। श्री जस्सा राम खेती करता था और श्री फुस्सा राम पशुधन चराता था। श्री जस्सा राम के एक पुत्र तेजाराम पैदा हुआ। जिनके नाम से तेजाखेड़ा ढ़ाणी बसी हुई है। श्री तेजाराम के तीन पुत्र आशाराम, देवाराम तथा हुकमाराम हुए।

आशाराम के दो पुत्र श्री तारू राम तथा श्री लेखराम हुए। श्री लेखराम सिहाग तेजाखेड़ा में ही रहते थे। यहीं पर रहते हुए श्री लेखराम सिहाग तथा श्रीमती सुगना देवी के घर पर एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसने इस देश के कमेरे वर्ग को एक करने में सारा जीवन लगा दिया। वह नाम है- 'चौ0 देवीलाल'।

कोई भी व्यक्ति इस पत्रिका के बारे में अपने विचार निम्न वेबसाइट पर भेज सकता है-

www.drnain.com

वंशावली

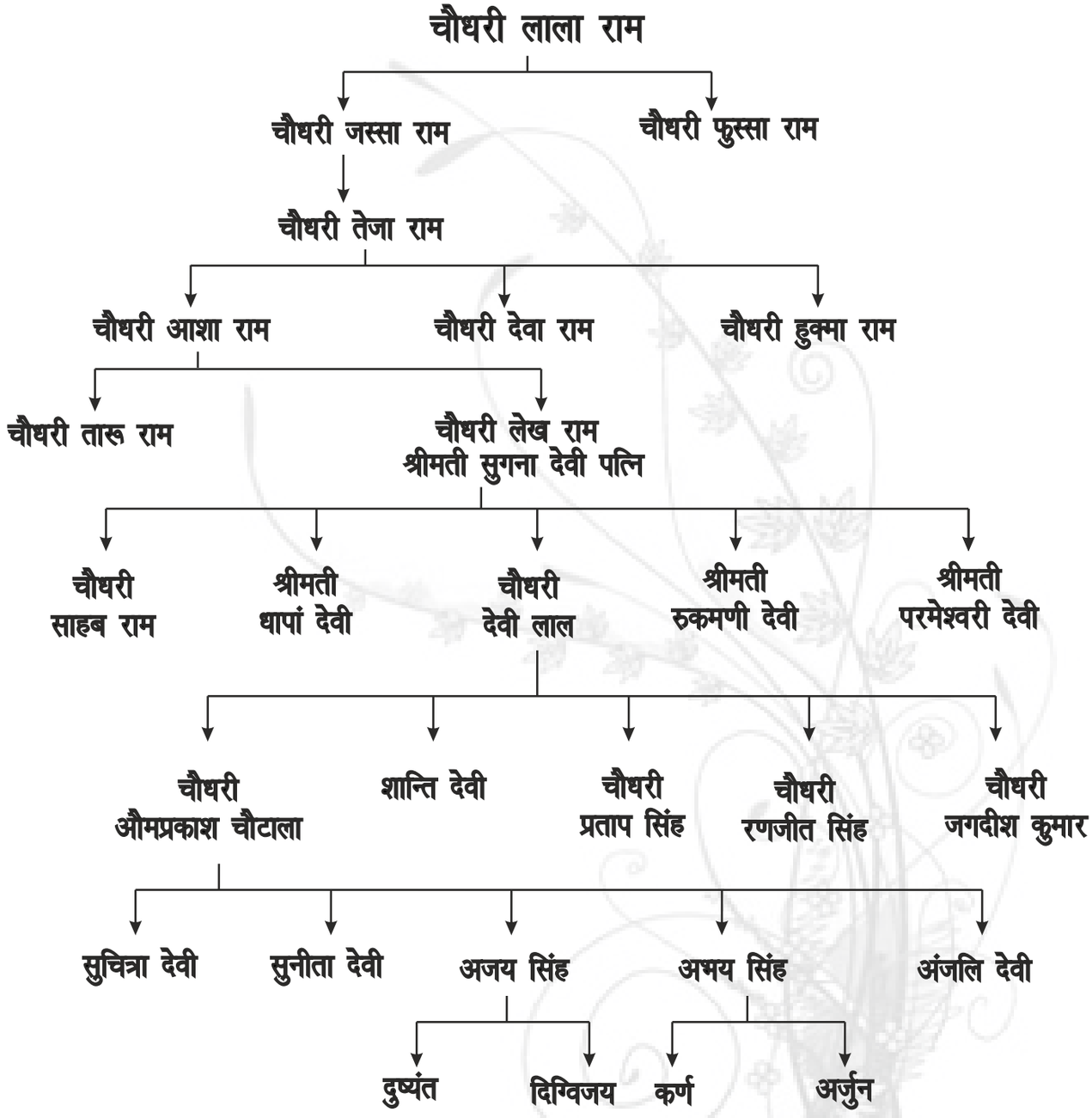

www.drnain.com

अनेक लोगों को शिखर पर पहुँचाया

राजस्थान व पंजाब की सीमा से सटे हरियाणा के जिला सिरसा के गांव चौटाला के निवासी चौ0 देवीलाल के खानदान ने इस क्षेत्र की राजनीति पर गत 65 वर्षों से न केवल एक तगड़ी छाप छोड़ी है बल्कि पारम्परिक राजनीतिक परिवार के रूप में एक नया इतिहास रचा है। वर्तमान में व्यक्तित्व के धनी चौ0 देवीलाल के परिवार को ही ऐसा गौरव प्राप्त है, जिसकी तीन पीढ़ियां राजनीति के शिखर पदों पर पहुंच कर जनता की सेवा में जुटी हैं। स्व0 चौ0 देवीलाल ने अमेरिका, आस्ट्रेलिया, नार्वे और चीन की यात्रा भी की। चौ0 देवीलाल ने अपने लम्बे राजनीतिक संघर्षों से जहां राजनीति के शीर्ष स्थानों को सुशोभित किया, वहीं उन्होंने देश के अनेक लोगों को राजनीति के शिखर पदों पर पहुंचाने में भूमिका अदा की। वी.पी. सिंह जहां चौ0 देवीलाल के त्याग की बदौलत ही देश के प्रधानमंत्री बन सके, वहीं बिहार में लालू यादव और उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह मुख्यमंत्री की कुर्सी तक भी चौ0 देवीलाल के सहयोग से ही पहुंचे। इसके अलावा चौ0 देवीलाल ने शरद यादव, एच.डी.देवेगौड़ा व चन्द्रशेखर जैसे महान् नेताओं के राजनीतिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

परिवार की चारों पीढ़िया एक साथ

माँ का देहांत

25 सितम्बर, 1914 को एक शाही खानदान व बड़े जमींदार घराने में जन्मे देवीलाल अपने परिवार के तीसरे बच्चे थे। बड़े भाई साहब राम व बहन धापा थी। परिवार के दो अन्य बहनें रूकमणी व परमेश्वरी भी हुई जो इनसे छोटी थी।

भारत की मिट्टी में अनेक महान् हस्तियों का जन्म हुआ है। ये हस्तियां लोगों के दुःख दर्द में सदैव उनके अंग संग रही और महान् परंपराओं को जन्म देती रही। इसी तरह के एक ऐसे शख्स की कहानी हरियाणा के सिरसा जिले के गांव चौटाला से शुरू होती है। यह कहानी है एक ऐसे भारतीय राजनीति के पितामह की, जिन्होंने अंतिम क्षणों तक किसान, मजदूर एवं गरीबों के लिए निरंतर संघर्ष किया और उन्हें यह सिखाया कि 'जब अधिकार मिलते नहीं तो छीन लिए जाते है।'

सभी वर्ग के हमदर्द हिंदूस्तान के इस विकास पुरूष का नाम है- 'चौ0 देवीलाल', जिन्हें 'जगत ताऊ, राष्ट्रीय ताऊ, भीष्म पितामह, वयो वृद्ध नेता, किसान नेता, गरीब, किसान मजदूरों के मसीहा, महानायक, युगपुरूष, महाबली, जननायक, हरियाणा के जन्मदाता, महान स्वतंत्रता सेनानी, वृद्ध पीढ़ी की गरिमा के प्रतीक, चौपाल की आबरू, गुलिवराना, सत्ता के सूत्रधार, किंगमेकर, शासक निर्माता, महबूब नेता, रहनुमा, हरियाणा केसरी, शेरे हरियाणा, धुरंधर जाट नेता व धरती पुत्र' के अलंकारों से सुशोभित किया गया है।

सन् 1925 में सारे भारत में प्लेग रोग फैला। इनकी माता श्रीमति शुगना देवी भी इस महामारी का शिकार बन गई, और इस छोटे से 11 वर्ष के चुलबुले बच्चे को रोता बिलखता छोड़कर सदा के लिए सो गई।

पिता की दूसरी शादी हुई, परंतु मौसी से वांछित प्यार न मिलने के कारण वे अकेलापन का शिकार होने लगे। अपनी मां की याद में कभी आंसू बहा लेते कभी दिल को समझा लेते। घर में मन नहीं लगता था। इस बात ने उनके मन पर एक गूढ़ प्रहार किया, जिसको केवल कोई बच्चा ही समझ सकता है। वह विद्रोही स्वभाव के बन गए।

खेल जीवन से ही मुझे लोगों की अगुवाई करने की प्रेरणा मिली

जब देवीलाल चौटाला गांव के प्राईमरी स्कूल में पढ़ते थे, तो जमींदार परिवार के बच्चों को अच्छे कपड़ों, जूतों में देखकर इनका मन भी सुन्दर पोशाकों के लिए ललचाता था। पिता जी के लिए बच्चे की इन इच्छाओं का विशेष महत्व नहीं था। इसलिए ऐसी बातों की प्रवाह भी नहीं करते थे। चौ0 लेखराम चाहते तो अपने बेटे को पढ़ने विलायत भी भेज सकते थे। पैसा रास्ते की रूकावट नहीं था परंतु जमींदारों की उस पीढ़ी के लिए स्कूल साधन मात्र थे, लड़कों को जवान होने तक, उनकी व्यस्तता बनाए रखने के।

अपने विद्रोह का प्रदर्शन के लिए स्कूल जाते वक्त नापसंद जूतों को रास्तें में ही छुपा देते थे तथा स्कूल में पूरे समय नंगे पैर ही रहते थे। स्कूल से लौटते पिता जी के डर से छुपाये जूते पहनकर घर आ जाते थे। इस प्रकार इन्हें बचपन में ही सर्वत्र विरोध का ही सामना करना पड़ा। धीरे-धीरे यही विरोध एक तीव्र विद्रोह की प्रवृति में ढ़लता गया। विद्रोह भी किसके विरूद्ध? व्यवस्था के। घर में व्यवस्था की प्रतीक मौसी जी थी। घर के बाद देवीलाल ने स्कूल की व्यवस्था को ललकारा। होस्टल में रहते हुए, देश भक्तों के बारे में साहित्य पढ़ना वर्जित था। राष्ट्रप्रेमी संस्थाओं के मैम्बर बनना और सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने पर मनाही थी। देवीलाल ने बचपन में ही इन निषेधों का उल्लंघन ही नहीं किया बल्कि देश के शास्त्रतंत्र को चलाने वाली देशी व विदेशी व्यवस्था को चुनौती दे डाली।

नौजवान देवीलाल में ऊर्जा की कमी नहीं थी। गांव से चौथी कक्षा पास करने के बाद उन्होंने मिडल स्कूल डबवाली मण्डी में दाखिला ले लिया। आठवीं कक्षा के बाद हरभगवान मैमोरियल स्कूल फिरोजपुर में कक्षा नौवीं में दाखिला ले लिया। यहां रहते हुए इनकी साईकिल चोरी हो गई। इसी बात से ये स्कूल छोड़कर बिना घर वालों को बताए, देव समाज हाई स्कूल मोगा में पढ़ने लगे। यहां स्कूल होस्टल में रहते थे। खेलों में रूचि इनका स्वभाव बन चुकी थी। अपनी टीम का नेतृत्व करना तथा उसे विजयी बनाना इनका अहम उद्देश्य होता था। कुश्ती खेलना ज्यादा पसंद करते थे। खेलों में ज्यादा व्यस्त रहने से पढ़ाई से ध्यान हटता गया। उनके अपने शब्दों में :-

> साथियों का आपस में झगड़ा होने पर निपटारा इस ढंग से करते कि सभी संतुष्ट होकर खेलने लगते।

"खेल जीवन से ही मुझे लोगों की अगुवाई करने की प्रेरणा मिली।"

साथियों का आपस में झगड़ा होने पर निपटारा इस ढंग से करते कि सभी संतुष्ट होकर खेलने लगते। इन्हें घूमने का बहुत शौंक था। एक बार इनके पिता जी को हिसार जाना था। इन्हें पता था कि पिता जी तो साथ लेकर नहीं जाएंगे। चुपके से संगरिया स्टेशन से देखा कि पिता जी गाड़ी में बैठ चुके हैं तो गाड़ी के शौचालय में बैठ गए और भटिण्डा तक वहीं रहे। शहर देखने के लिए चौ0 देवीलाल उन्मुक्त विचारों के धनी रहे हैं।

एक दिन किसी मुजारे के खलिहान की बटाई देनी थी। जब देवीलाल खेत में गए तो वहां खलिहान में अनाज का ढेर लगा था और पास में 70 साल का हरिजन मुजारा बैठा था। आधा अनाज जमींदार का तथा आधा मुजारे का था। अब मुजारे के हिस्से से नाई, धोबी, लुहार, खाती, मिरासी, डाकौत, चौंकीदार व तोला आदि के हिस्से निकालने के बाद बहुत थोड़ा-सा अनाज बचा। गरीब मुजारा देखकर रोने लगा। बूढ़ा मुजारा दिल की पीड़ा के लिए फूट पड़ा, "चौधरी कुछ तो छोड़, मेरे बच्चे भूखे मर जाएंगें ।" उसके कहने की देर थी कि देवीलाल ने उसके नाम की पांच मण अनाज की ढेरी अलग लगा दी। उसके मुंह से आशीष की फुलझड़ियां बरसने लगी, "चौधरी तेरी हजारी उमर हो, तूं ढेर सारी पढ़ाई पढ़े, तेरे नाम के नगाड़े बजें।"

'वन्दे मातरम्' जैसे अखबारों से देश भक्ति की प्रेरणा मिली।

स्कूली जीवन में जिस बात ने देवीलाल के जीवन को नया मोड़ दिया वह थी भारतवर्ष की आजादी की चाहत। देवीलाल को एक साथ ही दो मोर्चों पर लड़ाई लड़नी थी। पहले तो सामन्ती व्यवस्था के फंदे में फंसे देहातियों को उभारना और फिर देश की आजादी की मुख्यधारा को आगे बढ़ाना।

अंगेजी हकूमत को शोषण का प्रतीक मानने वाले देवीलाल ने 'मिलाप', 'प्रताप', 'वंदे मातरम्' जैसे अखबारों से देश भक्ति की प्रेरणा मिली। विद्यार्थियों पर देशभक्ति के अखबार पढ़ने की मनाही थी परंतु आजादी के परवानों को कौन रोक सकता था। देवीलाल स्वयं भी अखबार पढ़ते और अपने साथियों को भी पढ़ाते।

जब होस्टल वार्डन को पता चला कि होस्टल में चोरी छीपे अंग्रेजी प्रशासन के खिलाफ अखबार आते हैं उन्होंने इन्हें होस्टल से निकाल दिया। आजादी के संघर्ष में इतने खो चुके थे कि 1929 में कक्षा 10वीं की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर एक सक्रिय क्रांतिकारी के रूप में काम करने लगे।

आजादी के इस दिवाने को बचपन में ही शादी की बेड़ियां डाल दी गई। इनका विवाह गांव रामसरा (अबोहर) के श्री गणेशाराम की सुपुत्री हरखी देवी से हुआ परंतु मातृभूमि के इस महानायक को भारत माता से प्यार इतना ज्यादा था कि पत्नी का प्यार भी इन्हें घर नहीं रख सका।

एक हिंदूस्तानी नारी की तरह श्रीमती हरखी देवी ने इस महाबली की राह में रोड़ा अटकाने की चेष्टा को व्यर्थ समझा और उन्होंने अपने आपको घर गृहस्थी के व्यस्त कार्यों में ढाल लिया। चौ0 देवीलाल अपने गृहस्थी जीवन के प्रति गम्भीर नहीं थे परंतु पत्नी की अच्छी प्रवृति के कारण उनके गृहस्थ जीवन का वातावरण सौहार्दपूर्ण था। इसी वातावरण में देवीलाल के घर चार लड़के व एक लड़की पैदा हुई। सबसे बड़े लड़के औम प्रकाश का जन्म 1935 में हुआ।

आजादी के संघर्ष में इतने खो चुके थे कि 1929 में कक्षा 10वीं की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर एक सक्रिय क्रांतिकारी के रूप में काम करने लगे

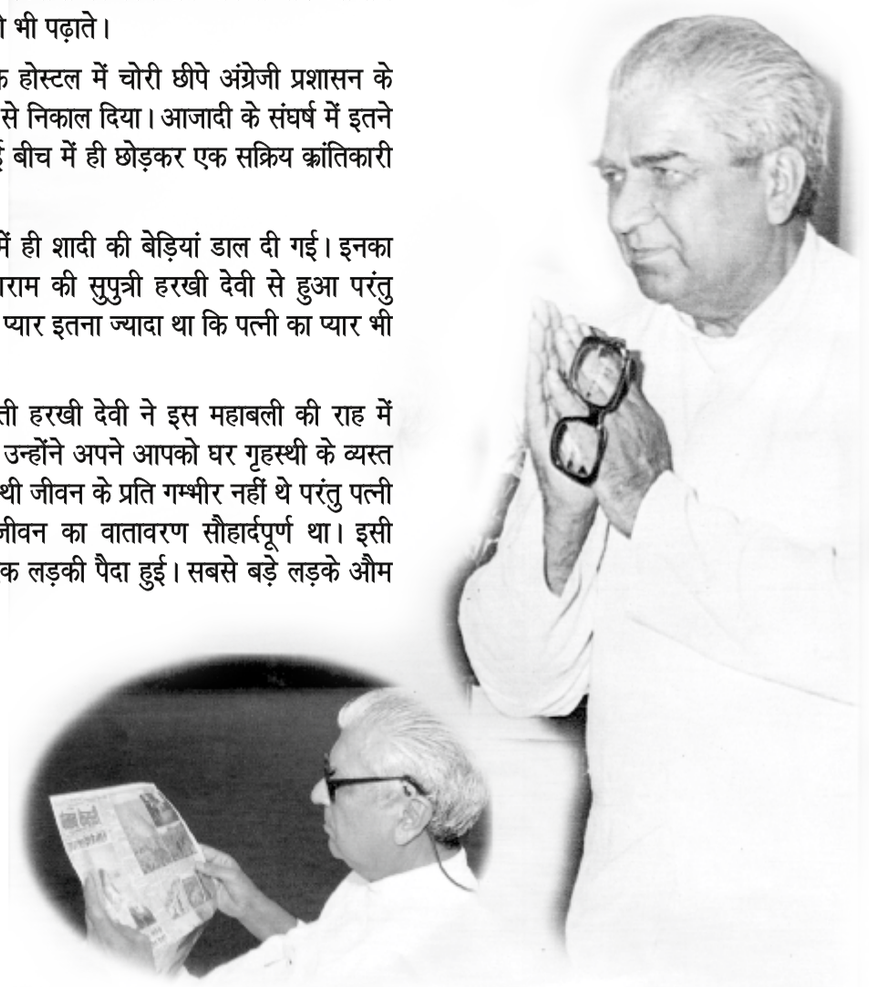

लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया

1929 में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की मांग कर दी। इस समय देवीलाल मोगा के देव समाज हाई स्कूल में दसवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। 1927-28 में जब वे डबवाली पढ़ते थे तो चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद व भगत सिंह के किस्से सुनते थे। 1928 में साईमन कमीशन का विरोध करते हुए उन्होंने लाला लाजपतराय पर लाठी बरसती हुई देखी तो उनका दिल रो उठा। इस घटना ने उनके नाजुक मन को हिला कर रख दिया। ज्यादा चोट आने की वजह से लाला जी चल बसे। देवीलाल ने फिर क्षेत्र के लोग इक्ट्ठे किये और जलूस निकाला। 1929 में देवी लाल ने पढ़ाई छोड़ दी और पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। 1929 में कांग्रेस स्वयं सेवक के रूप में लाहौर मीटिंग में कांग्रेस में भर्ती हो गए।

एक दिन देवीलाल को पता चला कि मदन मोहन मालवीय जी लुधियाना आ रहे हैं। वे मोगा से लुधियाना गए। वहां से पता चला कि मालवीय जी का भाषण तो अमृतसर में होगा। वे अमृतसर जा पहुंचे परंतु तब तक भाषण समाप्त हो चुका था। वे बहुत निराश हुए। फिर अपने-आपको गिरफ्तारी के लिए पुलिस के हवाले कर दिया। उम्र कम थी। इसलिए पुलिस वालों ने बच्चा समझ कर उन्हें छोड़ दिया। इस बात ने उन्हें और भी निराश कर दिया। 1930 में स्वामी केशवानन्द जी से 25 रूपये की नमक की पुड़िया खरीद कर सत्याग्रह आन्दोलन में योगदान दिया। 8.10. 1930 को देवीलाल को बोर्सटल जेल लाहौर भेज दिया। उन्हें 5 वर्ष की सजा हुई। 5.3. 1931-को गांधी इरविन समझौते के तहत 10 महीने बाद देवीलाल सहित सभी कैदी रिहा कर दिए गए। लेकिन गोल मेज कॉन्फ्रेन्स असफल होने से दुबारा फिर रिहा हुए सभी लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया। जब छुटने के बाद गांव आए तो पिता जी के डर से 2 दिन तक घर में नहीं घुसे। जब पता चला कि पिता जी कहीं बाहर गए हैं तो चुपके से घर में गए। गांव में देश भक्ति का कार्यक्रम बनाने लगे। कांग्रेसजनों को इक्ट्ठा करते और प्रभात फेरियां निकालते थे।

> इस घटना ने तो देवीलाल के कलेजे को लहुलुहान कर दिया। देवीलाल ने गांधी के खिलाफ काफी रोष व्यक्त किया।

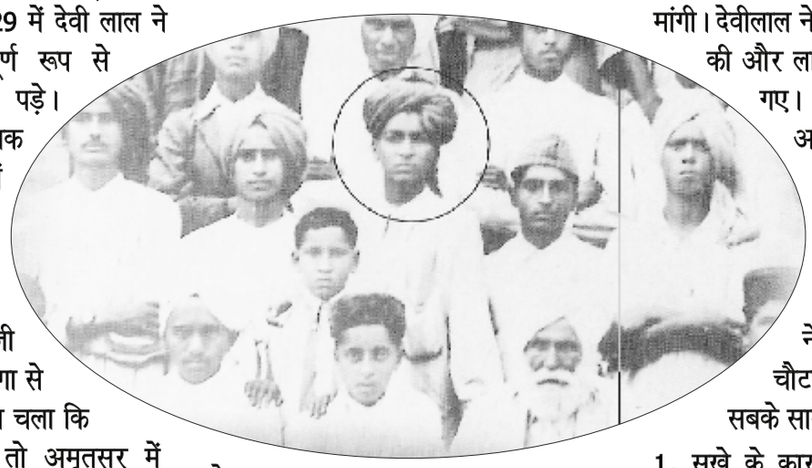

एक बार फेरियां निकालते वक्त गांव कालुआना में श्री लूणाराम जाखड़ ने देवीलाल के साथियों को रोका तो ये उसी वक्त अपने दल बल सहित मौके पर पहुंचे। 23.3.1931 में भगत सिंह, राजगुरू तथा सुखदेव को फांसी दे दी गई। यह गांधी इरविन समझौते का उल्लंघन था। इसके लिए गांधी जी दोषी थे। इस घटना ने तो देवीलाल के कलेजे को लहुलुहान कर दिया। देवीलाल ने गांधी के खिलाफ काफी रोष व्यक्त किया। 1937 में प्रान्तीय विधान सभा के चुनाव हुए। जिसमें हिसार उत्तर सीट पर युनियनिष्ट पार्टी के राव साहब नन्द राम तथा दूसरी तरफ निर्दलीय उम्मीदवार लाला आत्मा राम खजांची चुनाव में थे। इस चुनाव में लाला आत्मा राम ने देवीलाल के परिवार से मदद मांगी। देवीलाल ने इस चुनाव में काफी मेहनत की और लाला आत्मा राम चुनाव जीत गए। इस चुनाव से सभी को अहसास हो गया कि यदि कांग्रेस को आगे ले जाने वाला कोई है तो वह चौ0 देवीलाल ही है।

6.11.1937 को देवीलाल ने अपनी पहली जनसभा चौटाला गांव में बुलाई और सबके सामने ये मांगे रखी :-

1. सूखे के कारण जमीन का माल हटाया जाए।

2. भाखड़ा नहर परियोजना को लागू किया जाए। इस के बाद तो देवीलाल हर गांव गांव में चर्चा का विषय बन गए। जहां भी जाते भीड़ स्वागत करती और भीड़ को देखकर उनका जोश दौगुना हो जाता।

''मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल।
मगर लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया ।''

www.drnain.com

मैंने कभी भी चालाकी की राजनीति नहीं की

7.1.1938 को सिरसा में विशाल रैली का आयोजन किया गया जिसमें दस हजार से भी ज्यादा लोगों ने भाग लिया। देवीलाल की संगठन क्षमता का पता इस बात से भी चलता है कि पहली बार बहुत तादाद में औरतें इस सभा में आई क्योंकि राजस्थान की सीमा पर बसे इस गांव में औरतें अपने रीति-रिवाज अनुसार घर से बाहर भी नहीं निकलती थी। इसे पहला 'नहर-सम्मेलन' भी कहा गया। इसमें मुख्य मांगे निम्नलिखित थी :-

1. लोगों को पीने तथा सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध करवाया जाये।

2. भ्रष्टाचार हटाया जाये।

7.3.1938-को अदालत ने लाला आत्मा राम की जीत को अवैधानिक ठहराते हुए रद्द घोषित कर दिया। इस चुनाव में पंजाब सरकार ने अपनी पूरी ताकत झौंक दी थी। यह देखकर कि सारी सरकार कांप रही है तो मन ही मन देवीलाल मुस्कराते थे। इनकी कड़ी मेहनत से श्री साहब राम भारी बहुमत से विजयी हुए। चौ0 देवीलाल ने चुनाव जीतने के लिए कभी भी चालाकी का सहारा नहीं लिया। वह कहते थे,

''मैंने कभी भी चालाकी की राजनीति नहीं की क्योंकि यह एक ग्रामीण प्रवृति के विरूद्ध है।''

17.10.1940 में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया। जिसमें केवल लोक सेवक ही भाग ले सकते थे। इसलिए सिरसा इलाके से गांधी जी ने पंजाब विधान सभा के विधायक श्री साहबराम को चुना। श्री साहबराम की गिरफ्तारी की घटना का वर्णन चौ0 देवीलाल इस प्रकार से करते थे :-

''जिस दिन बड़े भाई साहबराम को सत्याग्रह करने के लिए चौटाला गांव से विदाई दी जानी थी उस दिन गांव के गांधी चौंक में हजारों की भीड़ जमा थी। पिता चौ0 लेखराम जी का मन चिन्ताओं में डूबा हुआ था। जैसे ही साहबराम जुलूस के आगे-आगे चौटाला से चले, तो पिता जी को ऐसा सदमा पहुंचा कि वे वहीं अधरंग के शिकार हो गए। श्री साहबराम सच्चे सत्याग्रही की भांति आगे बढ़ते रहे।''

> बेटे को घर से जाता देख कर श्री लेखराम को गहरा आघात पहुंचा और इस दिल की चोट से वह चारपाई पकड़ चुके थे

बेटे को घर से जाता देख कर श्री लेखराम को गहरा आघात पहुंचा और इस दिल की चोट से वह चारपाई पकड़ चुके थे। यह समय देवीलाल के लिए कठिन परीक्षा की घड़ी थी। एक तरफ से भाई से मिलने जाना और दूसरी तरफ बीमार पिता जी की सेवा करना बड़ा मुश्किल कार्य हो गया था, लेकिन देवीलाल के हौंसले बुलन्द थे। इसी बीच सभी कैदियों को 1941 में रिहा कर दिया गया।

8.8.1942-को गांधी जी ने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का ऐलान कर दिया। देवीलाल की पहली योजना थी, किसी न किसी प्रकार अंग्रेजी ठिकानों पर हमले किये जाएं और उनके हथियार छीने जाएं। उनकी ये योजना तो नाकामयाब रही परंतु उन्होंने हिम्मत रखी और दूसरी योजना बना डाली। इस योजना के अनुसार प्रतिदिन चौटाला गांव से सात स्वयं सेवक भटिंडा जाते। जिन्हें आदेश दिए गए थे कि वे अलग-अलग दिशा में चलने वाली रेलगाड़ियों में बैठ जाएं और रेलगाड़ियां जब स्टेशन से दूर चली जाएं तो जंजीर खींच कर गाड़ी रोक दें। यदि पुलिस पूछे तो, अपना नेता बेझिझक होकर देवीलाल बता दें। देवीलाल के कहने की देर थी, स्वयं सेवकों ने ऐसा ही किया। इससे रेल व्यवस्था में गड़बड़ी फैल गई। सभी रेल अधिकारी बहुत तंग हो गए। चारों ओर पुलिस सतर्क कर दी गई कि किसी न किसी प्रकार देवीलाल को गिरफ्तार किया जाए। देवीलाल सरलता से पुलिस के हाथों नहीं आना चाहते थे।

www.drnain.com

सिपाहियों को जान बचाने के लाले पड़ गये....

एक दिन जाण्डवाला गांव में जलसा करते वक्त अचानक एक थानेदार तीन सिपाहियों के साथ देवीलाल को हिरासत में लेने के लिए आ धमका। तो देवीलाल बोले ''थानेदार साहब मैं भागने वाला नहीं हूं आप अपनी जगह खड़े रहिये। मै भाषण के बाद स्वयं आपकी सेवा में हाजिर हो जाऊंगा ।''

थानेदार इन्तजार में खड़ा रहा। देवीलाल भाषण को और लम्बा करते चले गए ताकि भागने का मौका तलाशा जा सके। लेकिन परिस्थिति को देखते हुए जैसे ही भाषण दे रहे थे, उनकी नजर सामने खड़े एक लाठी वाले आदमी पर पड़ी। अचानक देवीलाल ने झपट कर उसके हाथ से लाठी छीनकर ज्यों ही थानेदार की ओर घूमे तो बेचारे थानेदार साहब व सिपाहियों को जान बचाने के लाले पड़ गए और वे वहां से भाग खड़े हुए। रास्ते में अपने दोस्त बस्ती को अपने कपड़े पहना दिए और स्वयं बस्ती के कपड़े पहनकर बाजरे के खेतों में छुप गए। खेतों में बाजरे की परल होती थी जहां देवीलाल आसानी से छुप सकते थे और पुलिस को उनका पता नहीं चल पाता था। पुलिस वाले बस्ती को देवीलाल समझ कर उसी के पीछे लग गए। किसी ने इनके बीमार पिता जी को झूठी अफवाह दी कि सरकार ने तंग आकर देवीलाल को गोली से मार देने का हुकम दे दिया है। पिता जी ने लोगों को कहा कि अगर देवीलाल किसी को मिल जाए तो उससे पूछना, तुमने अपने बाप की जान क्यों फंदे में डाली हुई है? अपनी और बाप की भलाई चाहते हो तो सरकार को गिरफ्तारी दे दो। जब पिता जी का यह संदेश देवीलाल के पास पहुंचा तो पिता जी की आज्ञानुसार घर पर आ गए और बोले मैं तभी गिरफ्तारी दे सकता हूं, जब मुझसे पहले एक दर्जन स्वयं सेवक सरकार की नीति के विरूद्ध गिरफ्तारियां दें। इस प्रकार से एक दर्जन आदमी देवीलाल के कहे अनुसार देश भक्ति के नारे लगाते हुए गिरफ्तार हुए।

अचानक देवीलाल ने झपट कर उसके हाथ से लाठी छीनकर ज्यों ही थानेदार की ओर घूमे तो बेचारे थानेदार साहब व सिपाहियों को जान बचाने के लाले पड़ गए और वे वहां से भाग खड़े हुए।

5.10.1942 को देवीलाल स्वयं गिरफ्तार हो गए। 15 दिन तक हिसार जेल में रहे। 20.10.1942 को इन्हें पुरानी सैन्ट्रल जेल मुलतान भेज दिया गया। जहां पर बड़े भाई साहबराम पहले ही जेल में थे। यहां रहते हुए इनकी जानकारी उर्दू अखबार के सम्पादक श्री यश जी से हुई। मुलतान जेल में बीड़ियों पर पाबन्दी थी। इसलिए बीड़ियों के आदी विशेषकर हरियाणवी बन्दी अपने हिस्से की खाण्ड बेचकर बीड़ियों खरीदते थे। देवीलाल यह देखकर बहुत नाराज हुए। अपनी जेब में जो तीन सौ रूपये थे, उनसे बीड़ियों के बण्डल मंगवा लिए और बण्डलों से भरे मटके जमीन के नीचे दबा कर रख दिए और हरियाणवी बन्दियों से बोले, तुम्हें बीड़ी चाहिए तो मेरे पास आ जाना।'' जरूरत पड़ने पर मटकों से बण्डल निकालकर देते रहते थे। इस प्रकार से कैद में भी कैदियों के दिलों को इस दिलदार ने जीत लिया था। अपने नेता देवीलाल के प्रेमभाव एवं सहयोग को देखकर कैदियों ने अपना प्रधान इनके बड़े भाई साहबराम को चुन लिया।

मुझे गर्व है कि मैं चौ० देवीलाल का बेटा हूँ

चौ0 देवीलाल जेल में रहते हुए कभी किसी अधिकारी से नहीं डरे। एक बार मुलतान जेल में कैदियों ने लाठी चार्ज के विरोध में भूख हड़ताल कर रखी थी, जब चौ0 देवीलाल को पता चला तो उन्होंने कैदियों को बुलाकर कहा,

''हम क्रांतिकारी हैं और क्रांतिकारी भूख से नहीं, खून से लड़ना जानते है ।''

और इतना कर कर उसी समय जेल सुपरीटैंडैन्ट से भिड़ने चल पड़े। सुपरीटैंडैन्ट ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि देवीलाल को इतना पीटों की दोबारा यहां आने का साहस न करें। इस पर चौ0 देवीलाल बोले,

''तेरे अन्दर हिम्मत है तो एक कदम आगे बढ़कर दिखा दे ।''

फिर सुपरीटैंडैन्ट गुस्से में आकर बोले कि देवीलाल को विरान पड़े बैरक में ले जाकर हैन्टर से पीट-पीट कर मार डालो। इतना सुनते ही चौ0 देवीलाल बौखला उठे और सिपाहियों को थप्पड़ दे मारे। यह देखकर पूरे जेल की पुलिस डर गई थी।

26.1.1943 कांग्रेस के आदेशानुसार स्वतन्त्रता सैनानियों को कैद में ही स्वतन्त्रता दिवस मनाना था। चौ0 देवीलाल ने एक कपड़े पर रसोई से रंग लेकर और हरे पत्तों को पीसकर तिरंगा झण्डा बना लिया। श्री यश ने यह झण्डा लहराया। जिससे तंग आकर पुलिस ने जेल में कैदियों पर लाठियां बरसाई । सबसे पहली लाठी देवीलाल के सिर पर लगी। ज्यादा चोट लगने से घायल हो गए फिर तो चौ0 देवीलाल बब्बर शेर की तरह गरज पड़े,

> मुझे अपने पिता की सबसे पहली याद उस समय की है जब मैं करीब 7-8 साल का रहा हूंगा।

''बन्द करो यह लाठी चार्ज ! इसे हम बरदास्त नहीं करेंगे। अगर झण्डा फहराना जुर्म है तो हम पर केस चलाओ।''

5.10.1943 में सजा पूरी होने पर देवीलाल जेल से रिहा हुए। अपने भाई साहबराम को जमानत पर रिहा करवा लिया गया। दोनों भाई जब चौटाला नगरी पहुंचे तो गांव के लोगों ने इनका भव्य स्वागत किया। इस संदर्भ में चौ0 देवीलाल के बड़े पुत्र चौ0 औमप्रकाश चौटाला ने लेखक को बताया,

''मुझे अपने पिता की सबसे पहली याद उस समय की है जब मैं करीब 7-8 साल का रहा हूंगा। जब मैं गांव में दूसरे बच्चों के मां-बाप को उनसे लाड-प्यार करते हुए देखता तो अपनी मां जी से पूछता, बाबू जी कहां हैं ? वे जवाब देती, ''गांधी बाबा के कहने पर जेल गए हैं ।'' मैं उन दिनों जेल और आजादी का पूरा मतलब तो नहीं समझ पाता था लेकिन यह जरूर जानता था कि मेरे बाबू जी किसी बड़े काम पर गए हैं। घर परिवार का कोई आदमी जब उन्हें जेल में मिलकर आता, तो सारा गांव इक्ठ्ठा होकर बड़े चाव से उनके किस्से सुनता। वह जब जेल से छुटकर आए, उस समय इलाके के लोगों ने उन्हें जो भारी सम्मान और प्यार दिया था, उसको याद करके आज भी मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। मुझे गर्व है कि मैं चौ0 देवीलाल का बेटा हूं। बाबू जी के राजनैतिक जीवन और संघर्ष की जो अमिट छाप मेरे ऊपर पड़ी, वह आजादी के आन्दोलन की यह घटना थी।''

15.8.1947-को भारत आजाद तो हो गया। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई परंतु आजादी के साथ आए विभाजन ने देवीलाल के निर्दोष मन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। देवीलाल के मन में एक और जुनून था और ये जुनून था, 'चौ0 देवीलाल के सपनों का हरियाणा'।

हक मांगने से न मिले तो उन्हें छीनना पड़ता है

यद्यपि भारत के दूसरे क्षेत्रों में काफी लोग हुए जिन्होंने भारतीय कृषि की व्यवस्था को सुधारने में योगदान दिया परंतु हरियाणा में 1930 तक ऐसा नहीं हुआ। ऐसे समय में लुटे हुए मुजारे व किसानों की दुःख भरी अंधेरी जिन्दगी में देवीलाल नामक चांद चमका। सन् 1936 में तमिलनाडू व पंजाब में 'अखिल भारतीय किसान सभा' गठित हुई। वहां से प्रो0 एन.जी. रंगा से प्रेरणा पाकर देवीलाल अपने इलाके में मुजारे व किसानों को एक जुट करने में लग गए।

देवीलाल की कोशिशों से ही मार्च 1931 में कांग्रेस के करांची सैशन में नेहरू जी ने भूमि सुधारों नियमों को अपने कार्यक्रम का एजेण्डा बनाया। नेहरू जी ने पहली बार माना कि जमीन की सीमा निर्धारित होनी चाहिए तथा फालतू जमीन गरीबों में बंटनी चाहिए या सरकार द्वारा ग्रहण करके गांव की सहकारी समितियों को दी जानी चाहिए।

> ऐसे समय में लुटे हुए मुजारे व किसानों की दुःख भरी अंधेरी जिन्दगी में देवीलाल नामक चांद चमका।

1938 में देवीलाल ने किसान सम्मेलन में अपने जोश का ढोल बजा दिया और बोलते हुए कहा :-

1. भाखड़ा नहर परियोजना लागू की जाए।
2. क्योंकि 1937 में भंयकर अकाल पड़ा है इसलिए भूमि का टैक्स माफ किया जाए।
3. किसानों की बेदखली सम्बन्धी मांगे मानी जाएं। अग्रलिखित जमींदारों की ज्यादतियों ने तो देवीलाल का दिल हिला कर रख दिया।
1. मुजारे की जिम्मेवारी होती थी कि पक्की फसल के बारे में जमींदार को बताए तथा बटाई का दिन निश्चित करे।
2. जमींदार का हिस्सा उसके घर डालना मुजारे के जिम्में था।
3. जमींदार के घर पड़े अनाज की सुरक्षा का कार्य मुजारे का था।
4. जमींदार के पशुओं का चारा लाना, पशुओं को डालना भी मुजारे का काम था।
5. मुजारे की औरत ही जमींदार के घर का लिपा-पोती, लकड़ी लाना, झाडू मारने आदि का काम सुबह से शाम तक करने के लिए मजबूर थी।
6. जमींदार के पशुओं को मुजारों के बच्चे चराकर लाते।
7. मुजारों के बुजुर्गों को जमींदार की फसल की रखवाली के लिए रात को पहरेदारी का काम करना पड़ता था।

ये सब देखकर देवीलाल ने मुजारों को एक झण्डे के नीचे लाने के लिए दिन-रात एक कर दिया। गांवों में जाते, सभाएं करते तथा जमींदारों के विरूद्ध अन्याय का ढोल पीटते।

15.8.47 को आजादी मिलते ही सभी किसानों में प्रसन्नता के फवारे फूट पड़े। अब तो उन्हें भी अपना हक जरूर मिलेगा। डा0 गोपीचंद भार्गव ने पंजाब के मुख्यमंत्री की कमान सम्भाली, उस समय चौ0 साहब राम एम.एल.ए. थे। लेकिन अब तक गरीबों की पैरवी करने वाले मुख्यमंत्री ने जमींदारों की तरफदारी करनी शुरू कर दी। पंजाब सरकार का निष्क्रिय रहने के पीछे यह कारण था कि जमींदारों के कुछ रिश्तेदार मंत्रीमण्डल में थे। 1949 में श्री भीमसैन सच्चर नए मुख्यमंत्री बन गए और उन्होंने मुख्यमंत्री बनते ही घोषणा करवा दी कि बेदखली कानून को हटाया जाए। लेकिन 18.10.1949 को भार्गव फिर मुख्यमंत्री बन गए। मई 1950 में सरकार ने एक कानून पास किया जिसके मुताबिक मुजारे तीन वर्ष तक बेदखल किये जा सकते थे। परंतु 100 एकड़ वाले जमींदारों पर यह कानून लागू नहीं होता था। इस कानून से देवीलाल जी और भी भड़क गए। उन्होंने फिर आन्दोलन तेज कर दिए। जिस कारण उन्हें हिसार जेल भेज दिया। हिसार जेल में भी सत्याग्रहियों का हौंसला बढ़ाते देखकर देवीलाल को हिमाचल की धर्मशाला गोल कैम्प जेल में भेज दिया गया। 1952-में विधान सभा के चुनाव आ गए। टिकट लेकर देवीलाल घर पहुंचे तो पूज्यपिता श्री लेखराम जी चल बसे थे। बेटा बाप को यह खुश खबरी खुद देना चाहता था परंतु विधाता को उनका यह सपना मंजूर नहीं था। इन्हें बहुत बड़ा सदमा पहुंचा।

15 दिन तक घर पर बैठना पड़ा। उसके बाद अपने आपको सांत्वना देते हुए और गरीबों की तरफ देखते हुए चुनावी जंग में कूद गए। असली लड़ाई चौ0 देवीलाल व चौ0 श्योकरण सिंह गोदारा के बीच थी। मुजारों के हकों की लड़ाई के 22 साल बलिदान भरे इतिहास के कारण अधिकांश मतदाताओं की सहानुभूति चौ0 देवीलाल के साथ थी। इधर चौ0 श्योकरण सिंह गोदारा ने वोट खरीददारी पर बहुत जोर लगाया परंतु आखिर विजय देवीलाल की ही हुई।

हरियाणा निर्माण के लिए किया खूब संघर्ष

सन् 1952 के चुनाव के बाद चौ0 देवीलाल की राजनैतिक जिम्मेवारियों का एक नया इतिहास शुरू होता है। इस इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय है - 'चौ0 देवीलाल के सपनों का हरियाणा ।'

23.6.1952-को विधान सभा में चौ0 देवीलाल ने जो प्रश्न उठाए वे उनकी सच्ची किसान हितैषी को सिद्ध करते हैं। उन्होंने विकास मंत्री से जानना चाहा :-

1. पतली डाबर, केहरावाल एवं सादेवाले के जमींदारों की जोतने के लिए कितनी जमीन रखी है या 1950 के कानून 22 के मुताबिक कितनी जमीन रखी थी ?
2. क्या पतली डाबर के जमींदारों द्वारा रखा गया क्षेत्र सारा स्वयं जोतने के लिए है ?
3. क्या यह सत्य है कि कानून होने के बावजूद बेदखली के नोटिस जारी है ?
4. क्या सरकार बेदखल किसानों को जमीन वापिस दिलाने के प्रति गम्भीर है?

इस प्रकार के प्रश्न पूछने से देवीलाल पर सरकार विरोधी होने का ठप्पा लग गया। यही कारण था कि कभी मंत्री पद का तो सवाल ही नहीं पैदा हुआ। राजनीति को व्यवसाय कभी नहीं समझा। राजनीति का प्रयोग इनके जीवन में साधन के तौर पर हुआ है। राजनीति को व्यवसाय समझने वालों के साथ इनकी कभी नहीं बैठी। लेकिन चौ0 देवीलाल बहुत खुश रहते थे क्योंकि वे गरीब, मजदूर तथा किसानों की बात उठा रहे थे। वे कहते थे,

> मई 1950 में सरकार ने एक कानून पास किया जिसके मुताबिक मुजारे तीन वर्ष तक बेदखल किये जा सकते थे। इस कानून से देवीलाल जी और भी भड़क गए।

> "मैं हमेशा उन लोगों के साथ रहा हूं जो सरकार से बाहर रहते हैं तथा अपनी जायज मांगों के लिए लड़ते हैं।"

यद्यपि बहुत से लोगों ने आजादी से पहले हरियाणा के निर्माण के लिए प्रयास किया परंतु वे असमर्थ रहे। 1857 की क्रांति के दौरान हरियाणा के क्रान्तिकारियों का नेतृत्व बहादुरशाह ज़फर ने किया था। पंजाब के उस समय के हाकिमों ने इसे पंजाब का हिस्सा बना दिया गया। बोली, संस्कृति, वेशभूषा के अलग होने के कारण इस क्षेत्र की तरफ किसी भी अंग्रेज या पंजाब के अधिकारी ने ध्यान नहीं दिया। कांग्रेस का भी यहां आजादी से पहले ज्यादा प्रचार नहीं था इसलिए इस पार्टी ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया। जिस कारण हरियाणा के लोगों के मन में इस भेदभाव से शंकाए घर कर गई कि उनकी उपेक्षा की जा रही है।

1949 में सच्चर ने एक भाषाई फार्मूला लागू कर दिया

1923 में लाहौर में स्वामी सत्यानन्द जी ने हरियाणा राज्य को अलग बनाने की बात कही। 1925 को पीरजादा मुहम्मद हुसैन ने हरियाणा को पंजाब से काटकर दिल्ली में मिलाने की मांग रखी। 1928 में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने भी यही मांग दोहरायी। हांलाकि सर छोटूराम ने मेरठ के एक सम्मेलन में यह मांग उठाई परंतु उनकी राय के अनुसार हरियाणा क्षेत्र दिल्ली का हिस्सा बनना चाहिए था। 1928 में फिर साईमन कमीशन के आगे भी यही मांग रखी परंतु पंजाब विधान परिषद ने विरोध किया। 1931 में प0 नेकीराम शर्मा व श्री रामशर्मा ने गांधी जी के आगे भी मांग रखी परंतु वे सहमत नहीं हुए। इस प्रकार से 40 के दशक तक ये मांग दबी रही। देवीलाल को सबसे पहले 1943 में जेल रहते हुए यह महसूस हुआ कि पंजाबी भाषी लोग, हिंदू भाषी लोगों से अपने आपको कुछ ज्यादा अच्छा मानते हैं। वे हिन्दी भाषी लोगों के साथ ठीक ढंग से बर्ताव नहीं करते हैं। अपने भाई साहबराम को कैदियों के चुनाव में जीताकर उन्होंने अपने मन में भड़की इस चिंगारी को कुछ हद तक शांत किया। 1945 में नेहरू जी ने वादा किया था कि भाषा एवं संस्कृति के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन होगा परंतु बाद में उन्होंने भी आजादी की लड़ाई को प्राथमिकता दी और आजादी के बाद में वे मुकर गए। भार्गव मंत्री मण्डल ने तो हिन्दी भाषी क्षेत्र का सर्वनाश करना ही शुरू कर दिया था। पूरा बजट पंजाबी भाषा क्षेत्र को जाने लगा। अपने क्षेत्र के इस स्वाभिमानी नेता से यह बात सहन नहीं हुई। 1948 में नेहरू ने भाषा के आधार पर प्रान्तों के पुनर्गठन को स्थगित करने की सिफारिश कर दी । 1949 में सच्चर ने एक भाषाई फार्मूला लागू कर दिया।

1953 में भारत सरकार के सामने हरियाणा बनाने की मांग रखी

पंजाब के दो जोन बना दिए गए। एक में पंजाबी और दूसरे में हिन्दी भाषा का प्रावधान रखा गया परंतु पंजाबी दोनों में अनिवार्य कर रखी थी। हरियाणवी लोग पंजाबी आसानी से नहीं सीख सकते थे। अतः सच्चर फार्मूले का विरोध हुआ। यह चलते-चलते डॉ0 भार्गव फिर मुख्यमंत्री बन गए। देवीलाल विधान सभा के सदस्य नहीं थे। इस कारण विधानसभा में ललकारने के लिए इन्हें 1952 में मौका मिला और विधायक बने। विधायक प्रताप सिंह कैरों से दोस्ती हुई। कैरों को राजस्व मंत्री बनाया गया और सच्चर मुख्यमंत्री बने। कैरों ने भी मुंह में राम बगल में छुरी वाला काम किया। अपने पंजाब के भूमिहीन किसानों को हरियाणा क्षेत्र में जमीनें देनी शुरू कर दी। देवीलाल के हरियाणवी नेताओं ने इसका डटकर विरोध किया।

1953 में देवीलाल ने भारत सरकार द्वारा बने आयोग के सामने हरियाणा बनाने की मांग रखी। परंतु 1956 में आयोग द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट इस क्षेत्र के विरोध में थी। इसी के चलते 1955 के आस-पास पंजाब में अकाली नेता तारासिंह ने पंजाब को धर्म के नाम पर बांटने की मांग रखी। इसका देवीलाल ने विरोध किया था परंतु सच्चर ने अकालियों की यह बात मान ली। 19.7. 1955 को इस बात से दुखी होकर कैरों-देवीलाल गुट ने सच्चर को हटाने की मुहिम चलायी। 21.1.1956-कैरों ने मुख्यमंत्री पद ग्रहण करते ही देवीलाल को मुख्य संसदीय सचिव बनाया और कहा कि हिन्दी भाषा से कोई भेदभाव नहीं होने दिया जाएगा। जब देवीलाल ने देखा कि रखी गई मांगे सिर्फ मांगें बनकर रह गई और कैरों ने भी कोई ध्यान नहीं दिया। 7.8.1955 को चौ0 देवीलाल ने सोनीपत में हरियाणा अलग करने की मांग रखी। अप्रैल 1956 में केन्द्रीय सरकार ने पंजाब को दो भागों में बांटा :-

1. पंजाबी राज्य को द्विभाषी घोषित कर दिया गया।
2. हिन्दी व पंजाबी राज्य की सरकारी भाषाएं मानी गई।
3. राज्य को पंजाबी व हिन्दी दो क्षेत्रों में बांटा गया।
4. क्षेत्रीय कमेटी रखी गई जिसमें उसी क्षेत्र के विधायक थे।

1956 में पंजाब सरकार ने यह फार्मूला लागू कर दिया परंतु 1957 में कैरों ने कमेटियों को स्वतन्त्र कार्य नहीं करने दिया। देवीलाल से यह देखा न गया और उनकी कैरों से नाराजगी बढ़ती गई। अन्याय के खिलाफ लड़ते समय उन्होंने यह कभी नहीं देखा कि सामने वाला कौन है और किस पद पर है। 1960 में चौ0 देवीलाल ने राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव में कैरों साहब से हरियाणा के प्रतिनिधित्व के बराबरी का हिस्सा मांगा ताकि ये लोग राज्यसभा में जाकर, 'चौ0 देवीलाल के सपनों का हरियाणा बना सकें ।' इसके लिए बंसीलाल व नेकीराम को राज्यसभा में तथा राव विरेन्द्र को पंजाब विधान सभा में भेजा। चौ0 देवीलाल कैरों से सख्त नाराज थे। नाराजगी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही चली गई। कैरों ने राव के मामलों में दखल देना शुरू कर दिया। कैरों ने चौ0 देवीलाल और राव विरेन्द्र की दोस्ती में फूट डालने की चाल चलते हुए चौ0 देवीलाल को बुलाकर कहा,

''चौ0 साहब आप नाराज क्यों होते हैं ?मैं आपको अलग मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपने के लिए तैयार हूं ।''

www.drnain.com

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

Free-Ebooks.net